VOL- XI | ISSUE- V | MAY | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

हिंदी उपन्यासों में चित्रित वृध्द विमर्श

डॉ. राठोड गुलाब सोमा
सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी
महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर-586108

प्रस्तावना :

आज यदि समाज को गौर से देखा जाय तो अनुभव किया जा सकता है कि, विकास के नए प्रतिमान स्थापित करने हेतु एक ओर जहाँ वैज्ञानिक एवं यांत्रिक प्रगति हो रही है वहीं दूसरी ओर नैतिक तथा मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। साहित्य हमेशा मशाल लेकर समाज से आगे चलता है ताकि समाज को राह दिखाई जा सके। जब-जब मानवीय मूल्यों का पतन हुआ है तब-तब साहित्य की इसी मशाल ने समाज को प्रकाश देकर मानव के मन में स्थित अंधकार को दूर किया है। साहित्य में प्राचीन काल से ही वृध्दों के जीवन के बारे में चर्चा की गई है। आधुनिक काल के साहित्य में वृध्दों के सामाजिक जीवन के बदलते परिवेश का सटीक चित्रण देखने को मिलता। जो इंसान उम्रभर अपने परिवार के लिए रात दिन मेहनत करता है, अपने बच्चों को वह पढ़ाता लिखाता है। काबिल बनाता है, लेकिन जीवन के आखिरी पड़ाव पर जब उसे परिवार की सबसे ज्यादा जरूरत महसूस होती है तब उसे अनुपयोगी मानकर उसकी अवहेलना की जाती है। यह पीड़ा उसे जीवित मृत्यु समान लगती है। वह अपने आप को कमजोर और अपाहिज समझने लगता है या घरवालों के द्वारा उसे ऐसा महसूस कराया जाता है। हिंदी उपन्यासों में भी वृध्दों के जीवन की त्रासदी का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है।

प्राचीन काल से अब तक कभी स्त्री विमर्श, कभी किसान विमर्श, कभी दलित विमर्श, कभी विकलांग विमर्श, आदि अनेकों-अनेक रूप धारण करके साहित्य ने समाज को उपकृत किया है। आज सबसे गंभीर समस्या वृध्द विमर्श की बनी हुई है। प्राय: वृध्दावस्था एक स्वाभाविक और प्राकृतिक अवस्था है जो धीरे-धीरे अपनी मंजिल की ओर बढ़ती है। वृध्द का शाब्दिक अर्थ है- पका हुआ, परिपक्व। हमारी संस्कृति में भरे पूरे परिवार और घर में बुजुर्गों की बडी अहमियत है। आधुनिकीकरण से सबसे ज्यादा हानि पारिवारिक जीवन की हुई है। आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ में आहिस्ता-आहिस्ता सामूहिक परिवार बिखरने लगा और उसकी जगह एकल परिवार ने ली। एकल परिवार के चलते परिवार में किसी समय श्रध्दा का स्थान रखनेवाले बुजुर्ग उपेक्षित होने लगे। मनुष्य विकास के पथ पर जैसे अग्रेसित होता गया परिवार से दूर होता गया और घर के बुजुर्ग का स्थान घर के केंद्र से निकलकर घर के कोने और फिर कब घर के बाहर होता गया पता ही न चला। इसी चलते समाज और परिवार में होते इस बदलाव का चित्रण साहित्य में देखने मिलता है। इक्कीसवीं सदी में वृद्धों के प्रति किए जाने वाले अनुचित व्यवहार को न्याय दिलाने हेतु साहित्यकारों ने कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधाओं को अपनाते हुए मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास अधिक गहराई तथा अधिक आत्मविश्वास के साथ किया है।

ममता कालिया द्वारा रचित 'दौड़' (2000 ई.) एक बहुचर्चित उपन्यास है। यह एक लघु उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास आधुनिकता के नाम पर समाज में आ रहे जबरदस्त बदलाओं का असर मानवीय संबंधों पर पड़ा है। पैसे, ग्लैमर, भव्यता और चकाचौंध की दीवानी यह पीढ़ी किसी के भी कंधे पर हाथ रखकर सफलता का चरम चूमना चाहती है। उसके लिए सामाजिक बंधन, परिवार, बंधन, ममत्व, सब छलावा है। वह केवल अपना जीवन जीना चाहती है, जहाँ न दूसरों की उखाड़-पछाड़ हो, न दबाव और न ही इस्तेमाल की जरा भी आशंका। 'दौड़' इन्हीं सब स्थितियों को चरितार्थ करता दिखाई देता है। अर्थात प्रस्तुत उपन्यास बाजारवाद, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में लिखा गया है, जो हमारे बदलते मानवीय मूल्य, विघटित होते संस्कार और पूज्य माता-पिता के दुख, भय, चिंता, तनाव और अंत में घृणा तक पहुँचकर पाठकों पर गहरा मार्मिक दंश कर जाता है। प्राय: उपन्यास

द्वारा आधुनिक काल में व्याप्त उत्तर औद्योगिक समाज तथा इक्कीसवीं सदी के युवा वर्ग की नवीन चिंतन पध्दति को दर्शाया गया है।

यह उपन्यास राकेश एवं रेखा नामक दंपति तथा उनकी संतान पवन एवं सघन के चारों और पल्लवित एवं विकसित होता है। पवन तथा सघन के माता-पिता से दूर होने के बाद उनका जीवन एकदम रिक्त सा हो जाता है। पुत्र घर आते तो है पर मेहमान बनकर। माता-पिता से बात तो करते हैं किन्तु पराया समझकर। यहाँ तक की माता से ज्यादा अपनी पत्नी को योग्य मानते हैं। ऐसे में किस प्रकार माता-पिता भीतर ही घुट-घुट कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं इसका जिक्र बखूबी 'दौड़' उपन्यास में देखा जा सकता है। किस प्रकार आधुनिकता के अंधे चश्मों को पहनकर संताने अपने माता-पिता को एक अनुपयोगी वस्तु के रूप में देखते हैं। स्वयं को आधुनिक एवं व्यावहारिक समझती हैं। ऐसे कई बिन्दुओं को इस उपन्यास में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संताने माता-पिता को अपने साथ रखना तो चाहती है, किन्तु माता-पिता अपना पुश्तैनी गाँव छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो पाए। पवन तथा सघन के माता-पिता राकेश एवं रेखा अपने शहर इलाहाबाद को नहीं छोड़ना चाहते। वह जीवन में रिश्तों को तथा जीवन मूल्यों को बहुत अधिक महत्व देते हैं बजाय आर्थिक उन्नति के। सीमित चीजों में संयम पूर्वक एवं संतोषपूर्वक जीना पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त श्री तथा श्रीमत सोनी जी उपन्यास में उपस्थिती दर्ज करते हैं जो इलाहाबाद में राकेश तथा रेखा के घर के नजदीक ही रहते हैं। पड़ोसी "अंकल मैं जितनी भी जल्दी करूंगा मुझे पहुँचने में हफ्ता लग जाएगा। हफ्ते भर तक बॉडी कैसे पड़ी रहेगी ...हम सब तो आज लूट गए अम्मा; लोग बता रहे हैं मेरे आने तक बॉडी को रखा नहीं जा सकता आप ऐसे कीजिए इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाहसंस्कार करा दीजिए। मेरे लिए तेरह दिन रूकना मुश्किल होगा आप सब काम पूरे करवा लीजिए।"1

इस प्रकार उपन्यास में आधुनिक यथार्थ को स्पष्ट रूप से दर्शाने का प्रयास किया गया है, जहाँ युवा पीढ़ी तथा बुजुर्ग पीढ़ी के आपसी तालमेल को आधुनिक व्यवस्था किस तरह अवस्थित कर देती है, इसका भरपूर चित्रण दिखाई देता है। एक ओर लेखिका बुजुर्गों के मन में उठने वाले भावों को अभिव्यक्त करती हुई दिखती है तो दूसरी और आधुनिकता के कारण युवा पीढ़ी के स्वभाव में आए हुए अंतर को रेखांकित करती है।

'गिलिगड्डु' (2002 ई.) चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने वृद्धों की समस्याओं को बहुत मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। 'गिलिगड्डु' का शाब्दिक अर्थ 'चिड़िया' है, लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने 'गिलिगड्डु' शब्द का प्रयोग उपन्यास के बुजुर्ग पात्र कर्नल स्वामी की जुड़वा पोतियों के लिए किया है। डॉ. अर्चना मिश्रा का कथन है "'गिलिगड्डु' उपन्यास में चित्रा जी ने वृद्धों की बेचारगी संवेदनशीलता और जीवन शैली को विस्तार दिया है। पुस्तक के फ्लैश पर लिखी इबारत में भी इस उपन्यास की आधारभूमि की ओर संकेत किया गया है। 'गिलिगड्डु' चित्रा जी का आकार में छोटा परंतु संवेदनशीलता में कहीं गहरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में सेवानिवृत बुजुर्ग की एक रेखीय कहानी नहीं, जीवन के रंग बहुआयामी रूपों में उभर कर आये हैं।"

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने तेरह दिनों के दो वृद्धों के जीवन का पूरा खाका ही नहीं बताया अपितु आज के बदलते जीवन मूल्यों को भी परिभाषित करने का प्रयास किया है कि कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों को घर में सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देती है। उपन्यास के भीतर सेवानिवृत इंजीनियर बाबू जसवंत सिंह एवं रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी वृध्द पात्रों के रूप में नजर आते हैं। पत्नी के मृत्यु के बाद जसवंत सिंह पुत्र के द्वारा समझाए जाने पर कानपुर से दिल्ली रहने को तैयार हो जाते हैं तथा कर्नल स्वामी अपने तीनों बेटों से अलग इसलिए हो जाते हैं कि तीनों बेटे ही नौकरी पाने के उद्देश्य से शहर छोड़कर चले जाते हैं। वास्तव में जसवंत सिंह को अपने पुत्र के घर में मेहमानों की तरह रहना पड़ता है। फिर धीरे-धीरे एक अनचाहे सामान की तरह वह वहाँ रहने लगते हैं। अपने बेटे के अपने प्रति उपेक्षा को देखकर ही जसवंत सिंह विवश होकर नरेंद्र से पूछते हैं, "तुम कभी बूढ़े नहीं होगे नरेंद्र ?"2 उनकी कीमत इतनी अधिक गिर जाती है कि न तो पुत्र उनसे बात करना चाहता है न ही बहू और पोता। अपने पुत्र के घर में उन्हें बालकनी में जगह बनाकर रहने के लिए स्थान मिलता है। जसवंत सिंह दुखी होते है कि उनके बेटे नरेंद्र तथा बहू सुनयना के मन में उनके प्रति कोई आत्मीयता नहीं है। जो कुछ लालच है वह, जमीन जायदाद तथा मृत सास के गहनों से है। सुनयना उनका अपमान व तिरस्कार करने का कोई भी

अवसर नहीं छोड़ती है। इतना ही नहीं उन्हें वृध्दाश्रम 'आनंद निकेतन' में भेजने की योजना भी बनाई जाती है। अपनी स्थिति को देखकर सोचते भी है "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह ! टॉमी की स्थिति निसंदेह उनकी बनिसबत मजूबत है।"3 ऐसी ही स्थिति कर्नल नारायण स्वामी की भी है। कर्नल स्वामी का मंझला बेटा संपत्ति को लेकर मारपीट करता है।कर्नल स्वामी की पड़ोसी मिसेज श्रीवास्तव जसवंत सिंह को कर्नल की स्थिति से अवगत कराती है और कहती है-"ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं..."4

'रेहन पर रग्घु' (2008 ई.) काशीनाथ सिंह द्वारा रचित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में काशीनाथ सिंह ने भूमंडलीकरण से होने वाले गाँव में परिवर्तन साथ ही मानवीय संबंधों में पनपती रिक्तता और बिगड़ते मानवीय मूल्यों का सच्चा सटीक चित्रण वृध्द रग्घु के माध्यम से किया है। कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी करते हुए रग्घु वहाँ की स्थानीय राजनीति से परेशान हो जाता है तथा उसे कॉलेज से इस्तीफा देना पड़ता है। सारी इज्जत से गाँव में गुजरी हुई जिंदगी बुढ़ापे के समय में पूरी तरह से बदल जाती है। रग्घु का बड़ा बेटा संजय सक्सेना की बेटी सोनल से विवाह कर शहर में बसता है। बेटी सरला भी अपनी नौकरी की वजह से घर से बाहर रहती है। बड़े बेटे का मर्जी के खिलाफ शादी करना रग्घु को पसंद नहीं है फिर भी वह मन मारकर बैठ जाते है। दो बेटे और एक बेटी से भरा पूरा परिवार होने के बावजूद गाँव में अकेलेपन से जूझते रहते है। भूमंडलीकरण के कारण होने वाला बदलाव और नई पीढ़ी की बदलती मानसिकता को रग्घु स्वीकार करते है अपने बेटे संजय के द्वारा अपनी पत्नी को छोड़ अमेरिका में किसी और गुजराती लड़की से शादी कर वहीं बसना उन्हें परेशान करता है। रमेश की पहली पत्नी सोनम के प्रति उनके मन में करूणा जागती है वह सोनम के साथ उसी के पास शहर में रहते हैं। बदलती इस मानसिकता को इस हद तक अपनाते है कि सोनम की उसके पुराने मित्र के साथ शादी कर उसका कन्यादान करने की बात वह सोचते है। यहाँ इस उपन्यास में काशीनाथ सिंह जी ने वर्तमान दौर में पारिवारिक जीवन में होता बदलाव, रिश्तों के बीच पनपता अजनबीपन, स्वार्थ केंद्रित बनती जिंदगी आदि पर मार्मिक व्यंग्य किया है।

'आखिरी मंजिल' (2008 ई.) रवींद्र वर्मा रचित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक यह बताने का प्रयास किया है कि कोई साहित्यकार अपनी वृद्धावस्था में किन अपेक्षाओं से होकर गुजरता है तथा कितनी अपेक्षाओं को समाज से पूरा करता हुआ प्राप्त होता है। यह देखने की बात है कि एक साहित्यकार के जीवन को उदाहरण बनाते हुए मनुष्य के मन में उठने वाली सभी परिस्थितियों को पाठक के सम्मुख रख दिया है। जो साधारणत: वृध्दावस्था के समय देखी जा सकती है। जैसे पुरानी स्मृतियों का बार-बार मन में उठना, जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का पर्दा उठाने का प्रयास करना, आत्मा तथा देह से जुड़े कई सवालों से होकर गुजरना, सही तथा गलत का अनुमान लगाते हुए पश्चताप एवं स्वाभिमान के बीच द्वंद्व उपस्थित होना आदि।

'चार दरवेश' (2011 ई.) हृदय नारायण मेहरोत्रा रचित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में चार वृद्धों के त्रासदी से भरे जीवन का चित्रण है। चिंताहरण, रामप्रसाद, शिवशंकर और दिलीपचंद ये चार वृध्द अपने अपने परिवार में अलग-अलग प्रकार से कष्ट झेलते हुए दिखाई देते हैं। चारों दरवेश जिस पुल पर आकार एक दूसरे से मिलते हैं वह उनका एक असली घर कहा जा सकता है। क्योंकि सिर्फ वही पुल है जहाँ वे एक दूसरे को सुनते है समझते है और एहसास करते हुए दिखाई देते हैं। डॉ.रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में " 'चार दरवेश' चार वृद्धों —रामचन्द्र गुप्ता, शिवशंकर,दिलीपचंद और चिंताहरण के जीवन पर केंद्रीत उपन्यास है। पाँचवें व्यक्ति के रूप में स्वयं कथाकार उपस्थित है। ये वृद्ध सूखे नाले की पुलिया पर बनी फसीलानुमा मुंडेर पर रोज सायं बैठकर अपने सुख-दु:ख को एक दूसरे के साथ ही अपने अतीत को कुतरते हैं, वर्तमान को कोसते हैं और समय के साथ हुए बदलाव का खाका भी खींचते जाते हैं, जिससे जिंदगी में आ रहे भौतिकवादी बदलावों की ओर इशारा भी करते हैं। उपन्यास वृद्ध जीवन की विवशता, लालसा व विषाद को बड़े ही सशक्त ढंग से सामने रखता है। वस्तुत: उपन्यास एक दारूण यथार्थ से हमारा साक्षात्कार कराता है। उस यथार्थ से जिससे हम सब भी घिरे हुए हैं।"5

'रिश्तों की आँच' (2016 ई.) डॉ. सूरज सिंह नेगी द्वारा लिखित है। प्रस्तुत उपन्यास में आज के बिखरते रिश्तों को किस प्रकार एक धागे में जोड़ा जा सकता है इसकी युक्ति बताने का काम लेखक ने किया है। आज के युग में जहाँ रिश्ते

महीन धागों की तरह छटक कर तोड़ दिए जाते हैं, वहीं यह उपन्यास उन महीन धागों को न सिर्फ जोड़ने का प्रयास करता है बल्कि उसमें स्नेह संचारित करने का एक उद्घोष भी है। यह वृद्ध विमर्श की विभिन्न कढ़ियों को खोलते हुए सत्य से साक्षात्कार कराने वाला उपन्यास है। "उपन्यास में वर्तमान दौर में गिरते जीवन मूल्यों और कठोर श्रम से होता मोह भंग, रिश्तों में आई खटास को दिखाने का प्रयास किया गया है। आज जब साधारण दिखने, अधिक मेहनत और ईमानदारी से कर्तव्य पाठ पर चलने वाले को तवज्जोह न देकर चापलूसों प्रतिस्पर्धी, स्वार्थी लोगों को सफल माने जाने की अल्पकालीन ही सही, भूल की जाने लगी है, ऐसे में यह उपन्यास उन मूल्यों और संस्कारों को पुनर्जीवित करेगा, साथ ही रिश्तों की गर्माहट के प्रति सोचने को मजबूर करेगा।"6 आधुनिक समय में जहाँ जीवन मूल्य, कर्तव्य निष्ठा, प्रेम, सादगी, निश्छलता, संघर्ष संस्कार त्याग आदि शब्द सिर्फ पुस्तकों की अमानत उपन्यास बन कर रह गए हैं, वहीं 'रिश्तों की आँच' का नायक रामप्रसाद अपने व्यक्तित्व में इन सब गुणों को समेटे हुए हैं। संपूर्ण कथावस्तु रामप्रसाद के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। 'वसीयत' (2018 ई.) सूरज सिंह नेगी द्वारा लिखित उपन्यास है। वृध्द जीवन की समस्याओं वृध्द मनुष्य की 'आकांशाओं तथा आशंकाओं को शब्दश: इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि एक संवेदनशील पाठक का मन आधुनिक जीवन की यंत्रणाओं के भोगी वृध्द जनों के प्रति न्याय दिलाने के लिए बरबस ही चिंतित हो जाता है। "उपन्यास में संस्कारों के भाव के साथ वृध्द हुए माँ-बाप के जीवन में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों तथा खाली होते गाँव की समस्याओं का चित्रण हुआ है।"7 आज जीवन में चारों ओर भौतिक सुख सुविधाओं की तो कोई कमी नहीं है किन्तु जीवन मूल्य संस्कारों और संस्कृति के प्रति मनुष्य तटस्थ हो गया है। लगातार नैतिक मूल्यों की हानी हो रही है। समाज एवं परिवार में प्रेम का स्थान द्वेष तथा ईर्ष्या ने ले लिया है। "पारिवारिक रिश्तों में व्यक्त खटास तथा दूरियों ने परिवार और समाज की खुशियों में बाधा डाल दी है बच्चों के पास माता-पिता तक के लिए समय नहीं है।"8

रमेशचंद्र शाह रचित 'सफेद परदे पर' (2006 ई.) एक छोट-सा उपन्यास है जो आधुनिक युग में वृद्धों के नजरिए पर केंद्रित है। उपन्यास का मुख्य पात्र एवं कथा नायक ध्यानचंद है। जो मनोविज्ञान के प्राध्यापक पद से सेवा निवृति प्राप्त कर चुके है। उसके परिवार में एक बेटा और एक बेटी है, दोनों ही विवाहित है। छोटा पोता भी है। पत्नी की मृत्यु हो चुकी है तथा वह स्वयं बेटे बहू एवं पोते के साथ सुविधाजनक जीवन यापित कर रहा है। एक दिन अचानक वह वानप्रस्थ जाने का सोचता है। इस दौरान वह इस शहर में स्वयं के एक फ्लैट में जाकर रहने लगता है। उस फ्लैट में वानप्रस्थ जैसे कुछ भी नहीं है। सभी सुख सुविधाएँ मौजूद हैं। यहाँ तक की रामरती बाई उनके लिए खाना बनाने तथा अन्य कामों को करने के लिए रखी गई है। एक दिन वह विचार करता है कि "क्या मैं सचमुच इतना आत्मनिर्भर हो चुका हूँ कि बगैर किसी की मदद के काम चला सकूँ ?"9 संपूर्ण कथानक में कथा नायक को स्वयं एकालाप एवं आत्मालाप के रूप में संवाद करते हुए देखा जा सकता है। यहाँ वृद्धों की सामान्य समस्याओं, उनके सरोकारों और आकांक्षाओं के बारे में चिंतन न करते हुए अभिजात्य और उच्च बुध्दिजीवी वर्ग के ऐसे वृद्धों के जीवन की परतें खोलता है जिन्हें पारंपारिक तरीके की पारिवारिक, आर्थिक और यहाँ तक कि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी सामना नहीं करना पड़ता है। दरअसल इस प्रकार के वृद्धों में यह मनोवृति समाज को देखकर भय के रूप में पनपती है।

निर्मल वर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'अंतिम अरण्य' वृध्द विमर्श को सही अर्थों में हमारे सम्मुख रखता है। यह निर्मल वर्मा का 2000 ई. में प्रकाशित अंतिम उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास तीन भागों में विभक्त कर लिखा गया है। 'अंतिम अरण्य' उपन्यास एक रिटायर्ड अधिकारी मेहरा साहब को केंद्र में रखते हुए लिखा गया है। 'अंतिम अरण्य' में मृत्यु उपन्यास का मूल स्वर रहा है। नायक मृत्यु से आक्रांत या डरा हुआ नहीं है। नजदीक आती मृत्यु का अहसास नजदीक रहने वाले ही चिंतन करते हुए दिखाई देते है। "कसकती संवेदना को पकड़ने और उसका तीव्र बोध कराने की निर्मल की क्षमता के सामने बहिर्मुखी प्रसंगों का जाल फैलाने वाले लेखकों के प्रयास कुछ-कुछ अर्थहीन लगते हैं। क्योंकि अंततोगत्वा जो संवेदनात्मक परिणाम प्राप्त करना है वह निर्मल केवल घटनाओं के संकेत से करते है। निर्मल का 'अंतिम अरण्य' इसी श्रेणी में आता है।"1 यह उपन्यास उनके पूर्व उपन्यासों से बहुत भिन्न है। प्तथम पुरूष शैली में लिखा हुआ यह उपन्यास कथावस्तु के पात्रों के बीच 'मैं' की भाषा में लिखा गया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उपरोक्त उपन्यास में साहित्यकारों ने आधुनिक यथार्थ को स्पष्ट रूप से दर्शाने का प्रयास किया है, जहाँ युवा पीढ़ी तथा बुजुर्ग पीढ़ी के आपसी तालमेल को आधुनिक व्यवस्था किस तरह अवस्थित कर देती है, इसका भरपूर चित्रण दिखाई देता है। एक ओर साहित्यकारों ने बुजुर्गों के मन में उठने वाले भावों को अभिव्यक्त करते हुए दिखाई देते है तो दूसरी और आधुनिकता के कारण युवा पीढ़ी के स्वभाव में आए हुए अंतर को भी रेखांकित करने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. *दौड़—ममता कालिया, अभिव्यक्त पत्रिका,भाग -18 https://www.abhivyaktihindi.org/upanyas/daud/daud18.htm*
2. *गिलिगडु-चित्रा मुद्गल, सामयिक पेपरबेक्स, संस्करण 2019 ई. पृ.80*
3. *गिलिगडु-चित्रा मुद्गल, सामयिक पेपरबेक्स, संस्करण 2019 ई. पृ.96*
4. *गिलिगडु-चित्रा मुद्गल, सामयिक पेपरबेक्स, संस्करण 2019 ई. पृ.138*
5. *चार दरवेश —उपन्यास का फ्लैप,सुशील सिध्दार्थ, पृ. 19*
6. *वसीयत-सूरज सिंह नेगी, साहित्यगार, संस्करण 2018 ई. पृ. 20*
7. *वसीयत-सूरज सिंह नेगी, साहित्यगार, संस्करण 2018 ई. पृ. 85*
8. *सूरज सिंह नेगी की रचनाओं के विविध पहलू- रेनू बाला, साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण 2020 ई. पृ. 79*
9. *सफेद परदे पर —रमेशचन्द्र शाह, किताबघर प्रकाशन, संस्करण 2011 ई. पृ. 19*
10. *निर्मल माया-सं. मधुकर उपाध्याय, वाणी प्रकाशन, पृ. 115*